KERALA SCHOOL KALOLSAVAM 2016-17

KANNUR - 2017 JANUARY 16-22

Code No. 660

विषय : एक कली खिलते समय ...

काली कली

धीरे-धीरे आती है एक सुशबू
उड़ती-उड़ती आती है एक तितली
क्या बताना चाहें किससे बताना
चाहें; सूर्य यानी चाँदनी से
खिलता है नयी प्रतीक्षा नयी उम्मीद ...
रहती है तम में मन में, नयी खुशी ... ।
आँगन में बैठकर देखती हूँ मैं
प्रकृती और मनवालों के खुशी
हे भगवान कितना सुन्दर !
इन्हा सोना क्यूँ रब्बने बनाया
इसमें है सब कुछ; ये खुबसूरत
मैं है मेरी नाम और ज़िंदगी ।
काली काली दिनों में ईश्वर बनाया
एक बेचारी को; जिसमें आँसू है ..,
हस्सी तो भूल गई; बिलकुल ।
कोई खिलता है ? सब कुछ
चुपाती है .... अब को मौका
नहीं है संदम का बड़ावा है ।

पास आये एक बेचारी की आवाज़
दिल देखती है, दिमाख चुपाती है
हाँ बताती है आँखें सुनती है
एक बेचारी रोती है; पुकारती है
क्या कुछ मिलता है....?
दुनिया में आँसू है कोई जन्म न है।

मनुष्यता मर गई है; हम
जान ये बार मुँ हर जीन भी
हार मुगा; सह नहीं सकता
हम सच्चा है लेकिन वह किसीको
मिलती नहीं क्योंकि किसी भी हमें
समज नहीं है; हमारा दर्द भी....।

प्यारी दिल है; सोचने का दिमाख है
बड़ी बड़ी सपना और प्रतीक्षा है
चमकती आँखें है; उड़ना की सवाल
है, देना की जवाब भी है
कोई सुनती नहीं; किसीको चाहें नहीं
मैं काली हूँ काली दुनिया की काली

KERALA SCHOOL KALOLSAVAM-2017
PROGRAMME COMMITTEE

चिल्लाती हूँ दिल; चलती हैं तुम
रोती हैं हम सुनती हैं भगवान
चीखती हैं तू... काली तन है पर
सफेद मन है; मैं रोती हूँ क्योंकि
मैं औरत हूँ; मैं मरती हूँ क्योंकि
मैं औरत हूँ; काली औरत...!

हम प्यार टूटती हैं; मिलती हैं नफरत
हम ख्वाब टूटती हैं; मिलती हैं सवाल
हम जिंदगी टूटती हैं; मिलती हैं संघर्ष
हम हवा टूटती हैं; मिलती हैं गरीब
हम कुछ टूटती हैं; कुछ और मिलती हैं
हे भगवान स्त्री के बिना दुनिया क्या है

सुनती हूँ मैं एक हस्सना का आवाज़
कितना सुन्दर, बोलो पायल क्या
बुलाती हूँ तू मुझे; बोलो सिंदूर
क्या चमाती है ये मुस्सकुराना...?
दूर दूर में खिलते हैं एक
काली फूल; जिसके खुशबू फैल रहा है।

माँ की 'पहली' प्यार; दीदी की 'पहली'
खेल; दादीमाँ की 'पहली'...
कहानी; बहन की 'पहली' हँसी..
और प्रकृति की 'पहली' बातें..
खिलना है हमारा उदय; नया उदय
टूटा पत्तियों और कटा फूलों का खुशी।

कितना प्यारी - सुन्दर घड़ी
अब तो बन गई हमारी ज़िंदगी.
तू है मेरी सफर तू है मेरी मंज़िल....
आती है उदय और खिलते के दिनों..
हर खिलते एक किस्सा है....
ये कली-कली की खिलती जैसे, अजीब।